भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 614

03 फरवरी, 2026 को उत्तरार्थ

विषय- नारियल की जलवायु और आपदा अनुकूल खेती

614. श्री जी. एम. हरीश बालयोगीः

क्या **कृषि और किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) पिछले तीन वर्षों के दौरान आंध्र प्रदेश में विशेष रूप से कोणसीमा में नारियल की खेती में जलवायु और आपदा अनुकूल पर सरकार द्वारा की गई पहलों का जिला-वार ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार ने कोणसीमा जिले में नारियल की उपज और उत्पादकता पर आवर्ती चक्रवातों, तटीय बाढ़ और लवणता के प्रभाव का आकलन किया है और यदि हाँ, तो उसके निष्कर्ष क्या हैं;

(ग) क्या सरकार ने आंध्र प्रदेश के चक्रवात संभावित तटीय क्षेत्रों, विशेष रूप से कोणसीमा जिले के लिए उपयुक्त किसी जलवायु-अनुकूल/उच्च उपज वाली नारियल किस्मों की पहचान / नामित किया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) पिछले तीन वर्षों के दौरान आंध्र प्रदेश में जलवायु-अनुकूल नारियल के पौधों के वितरण और जलवायु-अनुकूल खेती को बढ़ावा देने के लिए आवंटित, जारी और उपयोग की गई निधियों का जिला-वार ब्यौरा क्या है;

(ङ) आंध्र प्रदेश, विशेष रूप से कोणसीमा जिले में आपदा तैयारी और जलवायु-अनुकूल खेती के संबंध में नारियल किसानों के लिए आयोजित प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों की संख्या कितनी है; और

(च) क्या सरकार की कोणसीमा जिले में जलवायु और आपदा अनुकूल नारियल खेती के लिए समर्पित अनुसंधान/प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की कोई योजना है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क): आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, सरकार नारियल विकास बोर्ड और विभिन्न केंद्रीय एवं राज्य योजनाओं के सहयोग से विशेष रूप से कोणसीमा जिले में नारियल की खेती में जलवायु परिवर्तन से निपटने की क्षमता और मूल्यवर्धन संबंधी पहलों को बढ़ावा दे रही है। पुनर्जीवन एवं पुनर्रोपण योजना के अंतर्गत, नारियल उत्पादकों को जीर्ण और रोगग्रस्त नारियल के पेड़ों को हटाने और गुणवत्तापूर्ण पौधों से पुनर्रोपण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

समेकित बागवानी विकास मिशन और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के माध्यम से, फसलोपरांत होने वाले नुकसान को कम करने के लिए जलवायु अनुकूल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैसे कि पैकिंग हाउस और नारियल संग्रहण केंद्रों, के निर्माण के लिए सहायता प्रदान की जा रही है। आंध्र प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण समिति कच्चे नारियल की बिक्री पर किसानों की निर्भरता को कम करने के लिए, शुद्ध नारियल तेल, सूखा नारियल पाउडर और नारियल तेल सहित नारियल आधारित मूल्यवर्धन गतिविधियों को बढ़ावा दे रही है। इसके अतिरिक्त, थोताबादी पहल के तहत, बागवानी अधिकारी रगोस स्पाइरलिंग व्हाइटफ्लाई जैसे कीटों और बीमारियों के प्रकोप की साप्ताहिक क्षेत्र-स्तरीय निगरानी करते हैं और रायथु सेवा केंद्रों में किसानों को नियमित प्रशिक्षण और परामर्श प्रदान करते हैं।

(ख) एवं (ग): आंध्र प्रदेश राज्य द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, कोणसीमा जिले में नारियल की उपज और उत्पादकता पर बार-बार आने वाले चक्रवातों, तटीय बाढ़ और खारेपन के प्रभाव की नियमित रूप से निगरानी की जा रही है। बागवानी अनुसंधान केंद्र (एचआरएस), अंबाजीपेटा, क्षेत्र अवलोकन, किसानों की प्रतिक्रिया और प्रायोगिक परीक्षणों के माध्यम से खेतों की निरंतर निगरानी कर रहा है। अक्टूबर से नवंबर तक मानसून के बाद का समय बंगाल की खाड़ी में चक्रवात की सबसे अधिक संभावना वाला मौसम माना जाता है, जो कोणसीमा सहित आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों को प्रभावित करता है। विगत तीन वर्षों में, चक्रवात मोंथा (2025) का कोणसीमा पर सबसे अधिक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा, जबकि फेंगल (2024) और मिचौंग (2023) जैसे चक्रवातों ने तटीय मौसम को प्रभावित किया, लेकिन मुख्य नारियल उत्पादक क्षेत्र पर इनका अपेक्षाकृत कम प्रभाव रहा।

आकलनों से यह भी पता चला कि चक्रवातों और तेज़ हवाओं खासकर तीव्र चक्रवाती घटनाओं के दौरान नारियल के बागानों में ताड़ के पेड़ उखड़ गए, ऊपरी भाग क्षतिग्रस्त हो गए और नारियल के फल बड़ी मात्रा में गिर गए। तटीय बाढ़ और ज्वार-भाटे के कारण अस्थायी जलभराव और मिट्टी में लवणता बढ़ गई, जिससे जड़ों के स्वास्थ्य, पोषक तत्वों के अवशोषण और ताड़ के पेड़ों की समग्र मजबूती पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। लवणता तनाव के कारण नारियल की पैदावार कम हो गई, फूल आने में देरी हुई और पोषक तत्वों, विशेष रूप से पोटेशियम और बोरॉन की कमी, अधिक देखी गई। यह भी पाया गया कि बेहतर जल निकासी, अधिक जैविक पदार्थ के प्रयोग और संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन वाले बागानों में बेहतर सुधार और अपेक्षाकृत स्थिर पैदावार देखी गई।

लवणता और जल निकासी पर किए गए विशिष्ट अध्ययनों से पता चला है कि गाद जमाव और अतिक्रमण के कारण शंकरगुप्तम नाले के अवरुद्ध होने से लवणता का बैकवाटर अंतर्प्रवेश हुआ, जिससे केसनापल्ली और गोल्लापलेम सहित नौ गांवों में लगभग एक लाख नारियल के पेड़ प्रभावित हुए, और राजोले और मलिकिपुरम मंडलों में उपज का नुकसान 40 प्रतिशत से अधिक हुआ। दिसंबर 2023 में आए चक्रवात मिचौंग के दौरान लगभग 309 नारियल के पेड़ उखड़ गए, जबकि अक्टूबर 2025 में आए चक्रवात मोंथा के कारण लगभग 1,291 पेड़ उखड़ गए। इन निष्कर्षों के आधार पर, बागवानी विभाग और कोणसीमा जिले के नारियल किसानों को स्थान-विशिष्ट सलाह और अनुकूलन-उन्मुख प्रबंधन पद्धतियों की सिफारिश की गई है।

आंध्र प्रदेश राज्य द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, जलवायु-अनुकूल और उच्च उपज वाली नारियल की किस्में, जो आंध्र प्रदेश के चक्रवात-प्रवण तटीय क्षेत्रों, जिनमें कोणसीमा जिला भी शामिल है, के लिए उपयुक्त हैं, की पहचान कर ली गई है और उनका मूल्यांकन किया जा रहा है। बागवानी अनुसंधान केंद्र (एचआरएस), अंबाजीपेटा, आईसीएआर-केंद्रीय बागान फसल अनुसंधान संस्थान (सीपीसीआरआई) के समन्वय से जलवायु संबंधी तनावों के प्रति बेहतर प्रतिरोधक क्षमता वाली नारियल की किस्मों पर अनुसंधान कर रहा है। ईसी टॉल और गोदावरी गंगा किस्मों ने किसानों के खेतों में तुलनात्मक रूप से बेहतर प्रतिरोधक क्षमता और उपज स्थिरता प्रदर्शित की है।

(घ): पिछले तीन वर्षों के दौरान, बागवानी अनुसंधान केंद्र (एचआरएस), अंबाजीपेटा को नारियल विकास बोर्ड (सीडीबी) से ₹14,68,110 की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई और इसका उपयोग आंध्र प्रदेश में नारियल के पौधों के संवर्धन और आपूर्ति तथा उन्नत एवं प्रतिरोधी नारियल की खेती को बढ़ावा देने के लिए किया गया। इस सहायता के अंतर्गत, ईसी टॉल और गोदावरी गंगा किस्मों के पौधे, जिन्होंने किसानों के जमीनी अनुभवों के आधार पर प्रतिकूल मौसम की स्थितियों में अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया है, तटीय क्षेत्रों सहित विभिन्न जिलों में प्रचारित और वितरित किए गए।

(ड.) एवं (च): आंध्र प्रदेश, जिसमें कोणसीमा जिला भी शामिल है, में नारियल किसानों के लिए अनुसंधान केंद्रों और खेतों में गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के प्रभावों को प्रबंधित करने के लिए उपचारात्मक और सुधारात्मक उपायों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ऐसे कार्यक्रम नियमित विस्तार प्रयासों के अंतर्गत आवश्यकतानुसार आयोजित किए गए। विगत तीन वर्षों के दौरान, उचित प्रबंधन पद्धतियों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अनुसंधान केंद्रों और किसानों के खेतों में 10 प्रशिक्षण कार्यक्रम और 15 प्रदर्शन आयोजित किए गए।

इसके अतिरिक्त, आईसीएआर ने कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से आपदा की तैयारी और जलवायु-अनुकूल नारियल की खेती पर 22 प्रशिक्षण और 23 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जिनमें 2024-25 के दौरान कोणसीमा क्षेत्र में 1 प्रशिक्षण और 2 जागरूकता कार्यक्रम शामिल हैं, जिनसे 1282 नारियल किसानों को लाभ हुआ है।

*****